स्मृतिशेष डॉ. इन्द्रदेव, डॉ. वीरेन्द्र सिंह एवं डॉ. पुरेन्द्र नाथ सिंह की सर्जनात्मक जीवन-कथा

डॉ. राम आनन्द चौबे
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भुड़कुड़ा, गाजीपुर.

किसी भी व्यक्ति के बारे में विशेष रूप से उसके व्यक्तित्व और कृतित्व के विषय में कुछ लिखना बहुधा आसान नहीं होता। मनीषियों का व्यक्तित्व बहुत व्यापक और गूढ़ होता है, उनके विचार इतने ऊंचे और धरातल से जुड़े होते हैं कि सामान्य व्यक्ति के लिए आसानी से गेय नहीं होते। डॉ इन्द्रदेव ऐसे ही मनीषी थे, जिनके विशाल व्यक्तित्व और गूढ़ रचनाओं को एक लेख या कुछ पैराग्राफों में समेट देना कठिन कार्य है। इनकी जीवन-यात्रा के बहुत से पड़ाव थे, जिसमें आसान और सरल कुछ भी नहीं था। जीवन की झंझावात में एक अदभ्य साहस और विश्वास, कोलाहल में शांति और संसारिकता में उच्च स्तरीय आध्यात्मिकता उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

संस्थापक प्राचार्य डॉ0 इन्द्रदेव का जन्म 1 फरवरी, 1939 को गाजीपुर जनपद के नोनहरा थाना के अन्तर्गत महमूदपुर गाँव के क्षत्रिय परिवार में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जूनियर हाईस्कूल बिरनो में सम्पन्न हुई थी। इण्टरमीडिएट की शिक्षा आपने राजकीय सिटी स्कूल गाजीपुर से प्राप्त की थी। तत्पश्चात् स्नातक तथा स्नातकोत्तर की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त की। भूगोल विषय में स्नातकोत्तर करने के पश्चात् आपकी प्रथम नियुक्ति असम के गुवाहाटी में प्राग्ज्योतिष कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर हुई। सन् 1972 में श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा की स्थापना के बाद प्राचार्य पद पर चयन हो जाने पर आप असम से भुड़कुड़ा आ गये। तब महाविद्यालय इण्टर कालेज के प्रांगड़ में चल रहा था। महाविद्यालय के पास अपना भवन नहीं था। यह उनके लिए गम्भीर और चिन्तनीय प्रश्न था। उन्होंने भिक्षाटन के मार्ग का चयन किया। गाँव-गाँव

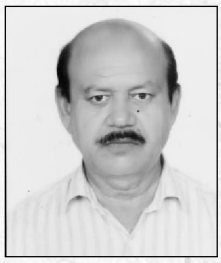

भिक्षाटन करके महाविद्यालय के लिए सात कमरों का निर्माण कराया। अब महाविद्यालय अपने भवन में स्थापित हो गया। प्राचार्य जी ने अपने जीवन-काल में गाजीपुर जिले के एक सुप्रतिष्ठित महाविद्यालय के रूप में इसे पहचान प्रदान की। उनके समय तक महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर कला संकाय, वाणिज्य संकाय तथा विज्ञान संकाय और स्नातकोत्तर स्तर पर भूगोल तथा समाजशास्त्र विषय में पठन-पाठन सुचारु रूप से सम्पन्न हो रहा था। जखनियाँ में तहसील तथा भुड़कुड़ा से गाजीपुर तक सड़क निर्माण आपके ही भगीरथ प्रयास की देन है।

प्राचार्य जी एक कुशल प्रशासक, प्रभावशाली वक्ता, भाषा के धनी, श्रेष्ठ विचारक और अत्यंत संवेदनशील व्यक्ति थे। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। अंग्रेजी जब बोलते थे तो धारा-प्रवाह बोलते थे। प्राचार्य पद पर रहते हुए हिन्दी विषय में ''भुड़कुड़ा की संत परम्परा'' शोध-विषय पर महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उनके धमनियों में सामाजिक समरसता का संचरण होता था। अस्पृश्यता और जातिवाद के घोर विरोधी थे। समाज के दबे-कुचले और दलित जाति के लोगों के प्रति उनका व्यवहार अत्यंत सराहनीय था। लोगों के साथ जुड़ाव ही उनका पहचान था। महात्मा गाँधी उनके आदर्श पुरुष थे। भगवान राम के अनन्य भक्त थे। मानस से विशेष लगाव था। उन्होंने मुझे बताया कि राम का उच्चारण करते समय जब तक नाड़ी का अन्दर की तरफ खिंचाव न हो वह सही नहीं है। अक्सर संध्या काल में अपने आवास पर मानस पाठ कराते थे। प्रकृति के अत्यंत प्रेमी थे। घोर निशा-

काल में भी कॉलेज प्रांगण में पधार कर वृक्षों की पत्तियों को पकड़कर उनका कुशल-क्षेम पुछते थे। कॉलेज के कण-कण में उनकी आत्मा बसती थी। लोक-सस्कृति उनके नस-नस में समाहित थी। वह स्वयं लोक गीत को प्रमुखता देते थे और छात्र-छात्राओं को भी लोक-संस्कृति की प्रस्तुतीकरण के लिए प्रेरित करते थे।

प्राचार्य जी शिक्षा के प्रति समर्पित थे। जब कभी हाथ में पुस्तक लिये छात्रों के भीड़ में हमें देखते थे तो एक वाक्य उनके मुँह से निकलता था, समाजशास्त्र को फिजिक्स बना दिये। वह अक्सर कहा करते थे कि शिक्षा का उद्देश्य रट्टुओं का फौज तैयार करना नहीं है, अपितु एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है, जिसकी स्वयं की अपनी सोच हो, उसे व्यक्त करने की सामर्थ्य हो, भाषा हो, कठिन से कठिन परिस्थिति में संघर्ष करने की क्षमता हो। इस लक्ष्य की पूर्ति कक्षाओं के भीतर मात्र अध्ययन-अध्यापन से सम्भव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कक्षाओं से बाहर शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन। इसलिए वह प्रत्येक बृहस्पतिवार को रंगशाला में शैक्षिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन कराते थे। सप्ताहिक मिलन कार्यक्रम के माध्यम से न केवल छात्र और अध्यापक एक दूसरे से परिचित होते थे बल्कि उनमे नवीन ऊर्जा का भी संचार होता था।

डॉ. इन्द्रदेव की प्रमुख कृतियाँ अधोलिखित हैं- भुड़कुड़ा की संत परम्परा, उलट देखो घट में ज्योति पसार, राम जहाज, देवेश की दस्तावेज, पतझड़ और वसंत, मॉरीशस की यात्रा, आदि। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अपराजिता भी उन्हीं की संकल्पना है। अपराजिता का अर्थ है- अजेय होना। अपराजिता एक पुष्प भी है, जो अतिशय सर्दी और तीक्ष्ण गर्मी में भी लहलहाती रहती है। संस्थापक प्राचार्य की बगीचा आज भी अजेय और हरा-भरा है, आगे भी लहलहाता रहेगा।

30 जून, 2001 सायं 6.00 बजे भुड़कुड़ा गाँधी आश्रम पर नीले रंग की एक मारुती कार खड़ी थी। सबकी आँखों से अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। प्राचार्य जी ने दृढ़तापूर्वक कहा कृष्णवत चला जाऊँगा। सब लोग उनको देखने लगे। वहाँ उपस्थित लोगों के मन में एक ही प्रश्न बार-बार उत्पन्न हो रहा था कि अब महाविद्यालय का विकास अपरूद्ध हो जायेगा। महाविदयालय के स्थापना के साथ ही प्राध्यापक के रूप में डॉ0 वीरेन्द्र सिंह (समाजशास्त्र), डॉ0 रणजीत सिंह (राजनीति विज्ञान), डॉ0 गंगेश प्रसाद द्विवेदी (संस्कृत), डॉ अपरवल राम यादव (हिन्दी), तथा डॉ. हृदयनारायण सिंह (प्राचीन इतिहास) की नियुक्ति हुई थी। वरिष्ठता क्रम में सबसे ज्येष्ठ होने के कारण डॉ. बीरेन्द्र सिंह जी को प्राचार्य पद प्राप्त हुआ। तत्कालीन परिस्थिति में महाविद्यालय की प्रगति और विकास को लेकर सभी लोग डॉ. वीरेन्द्र सिंह को संदेह की दृष्टि से देखते थे। किन्तु डॉ0 वीरेन्द्र सिंह साहब ने कॉलेज के प्रति अपनी लगन, निष्ठा, समर्पण और किये गये विकास कार्यों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि डॉ0 इन्द्रदेव के असली उत्तराधिकारी वही थे। डॉ0 इन्द्रदेव के बाद डॉ0 वीरेन्द्र सिंह ने अपने कार्यकाल में विकास की जो परचम लहराया, वह आज भी एक मिसाल है।

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह जी का जन्म गाजीपुर जनपद के सादात थाना अन्तर्गत टाड़ा गाँव में 4 जुलाई, 1946 को हुआ था। आपने इण्टरमीडिएट स्तर तक की शिक्षा भुड़कुड़ा इण्टर कालेज से प्राप्त की थी। स्नातक और स्नातकोत्तर समाजशास्त्र की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से ग्रहण की। आपने एम0फिल0 और पीएच.डी. की उपाधि महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से प्राप्त की। प्रख्यात समाजशास्त्री प्रो वंशीधर त्रिपाठी के निर्देशन में ''ग्रामीण गुटबन्दी'' विषय पर शोध-कार्य किया। इस पुस्तक में आपने ग्रामीण परिवेश में वैविध्यपूर्ण गुटों और उनकी सतत् प्रवाहशीलता के नवीनतम स्वरूपों का सूक्ष्म अन्वेषण किया है। यह पुस्तक समाजशास्त्रीय ज्ञान के क्षेत्र में अमूल्य धरोहर है। डॉ0 वीरेन्द्र सिंह अपने विद्यार्थी जीवन में फुटबॉल के बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। खेलने के लिए दूर-दूर तक जाते थे। प्राचार्य पद पर रहने के दौरान भी खेलकूद के आयोजन पर विशेष ध्यान देते थे।

प्राचार्य के रूप में डॉ0 वीरेन्द्र सिंह साहब का अप्रतिम योगदान है। वह प्रतिदिन सुबह 6:00 बजे लुंगी और गंजी पहनकर महाविद्यालय में प्रवेश कर जाते थे। सुबह 6-8 बजे

के बीच में महाविद्यालय में चल रहे निर्माण कार्य तथा बागवानी आदि का निरीक्षण करते थे। पुनः कॉलेज खुलने के समय 10.00 बजे आकर अपने चेयर पर बैठ जाते थे। अपने कार्यकाल के दौरान आपने स्नातक स्तर पर गृहविज्ञान तथा स्नातकोत्तर स्तर पर संस्कृत, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, हिन्दी, प्राचीन इतिहास तथा बी.एड. संकाय की मान्यता दिलायी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहयोग से फरवरी, 2007 में दलित चेतना का स्वरूप एवं विकास तथा फरवरी, 2008 में भारत में नक्सलवाद विषय पर राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी का आयोजन किया। समाजशास्त्रियों में उनकी एक विशेष पहचान थी। वह समाजशास्त्रीय सम्मेलनों में प्रतिभाग करने के लिए दूर-दूर तक जाते थे। महाविद्यालय के प्राध्यापकों को भी अपने विषय के संगोष्ठियों में जाने के लिए प्रेरित करते थे। उनका मानना था कि संगोष्ठियों में प्रतिभाग करने से नवीन ज्ञान की प्राप्ति के साथ-साथ नयी ऊर्जा भी प्राप्त होती है, जिसका लाभ विद्यार्थियों को मिलता है। आपके समय में महाविद्यालय के पूर्वी छोर पर चैनल गेट से पूरब तरफ दो मंजिल तथा दक्षिणी छोर पर बी0एड0 संकाय के लिए भवन का निर्माण किया गया। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहयोग से महिला छात्रावास का निर्माण हुआ।

डा0 वीरेन्द्र सिंह जी दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। वह अपनी बात पर सदैव अटल और अडिग रहते थे। एक बार जिस कार्य के लिए हाँ कह दिये उसे अंत तक हाँ ही कहते थे। उसे पूरा करके ही मानते थे। अक्सर लोग उन्हें 'बड़का माट साहब' कहते थे। बड़का माट साहब जब किसी को डॉटते थे, तब उस दिन घर बुलाकर चाय अवश्य पिलाते थे। उनका गुस्सा क्षणभर के लिए होता था। वैयक्तिक स्तर पर अभिभावक की सफल भूमिका का निर्वाह करते थे। उनमें सहयोग की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनके कृतियों में ग्रामीण गुटबन्दी, विकास का समाजशास्त्र, सामाजिक न्याय, परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र आदि प्रमुख हैं।

डॉ0 पुरेन्द्र नाथ सिंह महाविद्यालय, प्राचार्य डॉ0 इन्द्रदेव और प्राचार्य डॉ0 वीरेन्द्र सिंह के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे। वह प्रतिदिन बैग में एक पैंट-शर्ट, ब्रस-मंजन आदि लेकर आते थे। वह कहते थे कि प्राचार्य जी कब दिल्ली, लखनऊ जाने के लिए कह देंगे कोई निश्चित नहीं है। इसलिए आवश्यकता की वस्तुओं को साथ लेकर चलते हैं। डॉ0 पुरेन्द्र नाथ सिंह जी का जन्म गाजीपुर जनपद के खानपुर थाना अंतर्गत सौना गाँव में एक सामान्य क्षत्रिय परिवार में 6 जनवरी, 1656 को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अठगाँवा में हुई थी। माध्यमिक और उच्च शिक्षा उदय प्रताप कॉलेज वाराणसी से प्राप्त की थी। आपने पीएच.डी. की उपाधि पं. दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर से प्राप्त की थी। जनसंख्या भूगोल और ग्रामीण अधिवास इनका प्रिय विषय था।

डा0 पुरेन्द्रनाथ सिंह जी सरल, सहज, मृदुभाषी तथा मिलनसार व्यक्ति थे। वह सदैव प्रसन्नचित रहते थे। उनके व्यक्तित्व में गुस्सा के लिए कोई स्थान नहीं था। उम्र में बड़े होने के बाद भी मेरे साथ मित्रवत व्यवहार करते थे। कॉलेज के प्रति निष्ठा और समर्पण इतना कूट-कूट कर भरा हुआ था कि स्वप्न में भी उन्हें कॉलेज ही याद आता था। उन दिनों सायं काल में जखनियाँ से वाराणसी जाने के लिए एक ही ट्रेन थी, भटनी-वाराणसी पैसेजर। यह ट्रेन अक्सर लेट पहुँचाती थी। कभी-कभी वाराणसी पहुँचने में रात्रि के 11-12 बज जाते थे। ऐसी स्थिति में अधिकांश लोग दूसरे दिन महाविद्यालय नहीं आते थे। किन्तु बाबू पी0 एन0 सिंह जी रात्रि के 12:00 बजे घर पहुंचने पर भी सुबह 7.00 बजे के ट्रेन से नियमित कॉलेज आते थे। उनकी नींद कभी पूरी नहीं होती थी। सम्भवतः उनके गम्भीर रोग का भी यह कारण बना। वह असमय स्वर्गवास को सिधार गये। बाबू पी0एन0 सिंह जी नियमित डायरी लिखते थे। प्रतिदिन की घटित घटनाओं तथा एक-एक पैसे के आय-व्यय को नियमित सूत्रबद्ध करते थे। अपनी ईमानदारी और विनोदपूर्ण व्यंग तथा कॉलेज के प्रति समर्पण के लिए सदैव याद किये जाते रहेंगे।

अंत में महाविद्यालय के तीनों कर्मयोगी महान विभूतियों को विनम्र श्रद्धांजलि। शत-शत नमन्।

***